उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० — पत्र

दिगंत - भाग - 2 - गद्य भाग

शीर्षक - 'ओ सदानीरा'

लेखक - श्री जगदीश चन्द्र माथुर

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
स०उ०सं० महावि० सुखवेन्द्र,
12/06/2021 पूर्णियाँ

प्रश्न: - चम्पारण क्षेत्र में बाढ़ की प्रचंडता के क्या कारण हैं?

उत्तर:- बिहार के चंपारण क्षेत्र में बाढ़ की वीभिषिका से एक विशाल क्षेत्र प्रभावित है। गंडक, मसान, सिकराना इत्यादि इस क्षेत्र में नदियाँ प्रवाहित होती हैं। अपने आस-पास हरे-भरे वृक्षों के नयनाभिराम दृश्य के बीच मखमली हरित-कालीन सी उर्वरा भूमि को निरंतर अपने जल से सिंचित करती है। मनुष्य, पशु, पक्षी आदि समस्त प्राणियों की प्यास भी इनके जल से बुझती है, तभी तो लेखक ने उन्हें सम्बोधित किया है "ओ सदानीरा"।

परन्तु, लेखक के कथनानुसार पिछले छह-सात सौ साल से, चंपारण से गंगा तक फैले 'महावन' अर्थात् विस्तृत क्षेत्र में फैले वन के वृक्षों का काटा जाना निरन्तर जारी है। यहाँ वनों की कटाई तेजी से हो रही है। इसके परिणामस्वरूप नदियों के तटों पर पानी का कटाव सदा चलता रहता है। इन नदियों ने अपना धैर्य खो दिया है। अब उसके पानी को रोकना आसान काम नहीं है।

अतः वर्षा ऋतु में हिमालय की ढलान से बहकर आया जल तथा वर्षा का जल बाढ़ की प्रचंडता का कारण बन जाता है। इस त्रासदी को झेलने के लिए यहाँ निवास करने वाले विवश और लाचार हैं।

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० -पत्र

निबंधमाला - गद्य भाग

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं०महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
12/06/21

शीर्षक :- 'सिद्धि और प्रसिद्धि'

लेखक :- किशोर जी

प्रश्न :- आधुनिक युग में देश अथवा विदेश को किस प्रकार की साहित्य की जरूरत है, इस पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- 'सिद्धि और प्रसिद्धि' रचनाकार किशोरी (किशोर जी) का प्रसिद्ध निबंध है। लेखक ने इस निबंध में आधुनिक युग में देश अथवा विदेश को किस प्रकार की साहित्य की आवश्यकता है, इस पर विस्तार से प्रकाश डाला है। उनका कहना है कि सम्पूर्ण विश्व को ऐसे साहित्य की आवश्यकता है, जो परंपरा पोषित होकर भी नवीन भावों और युगध्वनियों को मार्मिक बनाकर व्यक्त करने का सामर्थ्य रखता हो, जो कि साहित्यिक और शास्त्रीय दृष्टिकोणों के साथ-साथ जनवादी दृष्टि से भी सफल उतरता हो। लेखक का कहना है कि समय में परिवर्तन होना चाहिए। अब परियों, अन्नदाताओं और परवरदीगारों के सामने फरमाइशी रेकार्ड बजाने के दिन लद गये। आज आदमी की आवाज पहचान कर आदमी के लिए उसी की आवाज में साहित्य लिखना होगा।

इस प्रकार निबंधकार किशोर जी भावी साहित्य का स्वरूप स्थिर करते हुए स्वयं लेखकों के साधारणीकृत होने का संदेश देकर घोषणा करते हैं कि पत्थर को देवता बनाकर बहुत दिनों तक पूजा गया, अब इन्सान को भगवान बनाकर उसकी वन्दना करनी होगी

2021 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए — डॉ० देव चरण प्रसाद, एसो० प्रो० हिन्दी, शुक्रवार

'निर्मला' उपन्यास — राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० दि० पत्र 12/06/21

लेखक — मुंशी प्रेमचन्द

शास्त्री प्रथम खण्ड

प्रश्न :- निर्मला उपन्यास के आधार पर डॉ० भुवन मोहन सिन्हा की माता रंगीलीबाई का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :- निर्मला उपन्यास में नारी-पात्र रंगीलीबाई डॉ० भुवन-मोहन सिन्हा की माता और बाबू भालचन्द की पत्नी है। उपन्यास में उसकी भूमिका बहुत कम है। इसके बावजूद भी लेखक उसके चरित्र की मुख्य-मुख्य खूबियों को प्रस्तुत करने में सफल रहा है।

रंगीलीबाई सुन्दर व्यक्तित्व वाली नारी है। लेखक के शब्दों में उसकी सुन्दरता इस प्रकार है— "गोरे मुख की प्रसन्नमुख महिला थी। रूप और यौवन उससे विदा हो रहे थे, पर किसी प्रेमी मित्र की भाँति मचल-मचल कर तीस साल तक जिसके गले से लगे रहे, उसे छोड़ते न बनता था।"

रंगीलीबाई अपने पति के समान दहेज का समर्थन करती है। वह भी शादी-ब्याह में दहेज को प्रमुख मानती है। निर्मला के पिता के देहान्त के बाद वह अपने पुत्र की शादी वहाँ करने से इन्कार कर देती है। पति ने कहा कि मुझे कहने में संकोच हो रहा है, तो वह बोलती है— "साफ बात कहने में संकोच क्या? हमारी इच्छा है नहीं करते, किसी का कुछ लिया तो नहीं है। जब दूसरी जगह दस हजार नगद मिल रहे हैं, तो वहाँ क्यों न करूँ? उनकी लड़की कोई सोने के थोड़े ही है। वकील साहब जीते होते तो शरमाते-शरमाते पन्द्रह-बीस हजार दे मरते। अब वहाँ क्या रखा है।"

जब वह निर्मला की माँ का पत्र पढ़ती है तो उसका हृदय द्रवित हो जाता है और ब्राह्मण को बैठे देखकर वह कहती है— "है, अभी है, जाकर कह दो, हम विवाह करेंगे, जरूर करेंगे। बेचारी बड़ी मुसीबत में है।"

शेष आगे -

वह एक व्यवहार कुशल गृहिणी है और स्पष्टवादी भी है। वह बढ़-चढ़ कर बात करने वालों से घृणा करती है। वह सत्य के अधिक निकट रहती है। वह अपने परिवार की असलियत प्रकट करने मे नहीं चुकती। जब भुवन भुवनमोहन निर्मला से शादी करने के लिये इन्कार करने पर अपनी हैसियत की बात करता है तो वह स्पष्ट शब्दों में कहती है- "आया है वहाँ से हैसियत लेकर! तुम कहाँ के धन्ना सेठ हो? कोई आदमी द्वार पर आ जाये, तो एक लोटा पानी को तरस जाय। बड़े हैसियत वाले बने हो। रंगीलीबाई का यह कथन वास्तव में उसके यथार्थ को दर्शाता है।

अतः हम कह सकते हैं कि रंगीलीबाई के चरित्र को कुछ ही अंशों मे व्यक्त किया गया है। थोड़े में ही उसके उज्ज्वल चरित्र के दर्शन हो जाते हैं।